मूल्य : एक प्रति ₹ 0.50 वार्षिक ₹ 5.00

नेशनल बुक ट्रस्ट संवाद

वर्ष 18, अंक 10

nbt.india
एकः सूते सकलम्

अक्तूबर 2013

अंदर के पृष्ठों में . . . . . ➤

न्यास की पुस्तकों का लोकार्पण 2
प्रकाश मनु को सम्मान 2
अरविंद कुमार सिंह को सम्मान 2
राष्ट्रीय पुस्तक न्यास मुख्यालय में 'हिंदी पखवाड़ा' का आयोजन 3
राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत के नए प्रकाशन : एक परिचय 3
स्कूली बच्चों के लिए अंतर्क्रियात्मक कथावाचन सत्र 4
झज्जर में शिक्षा शिविर का आयोजन 4
पुस्तक प्रकाशन में प्रशिक्षण पाठ्यक्रम का उद्घाटन 5
लाला जगदलपुरी को समर्पित हल्बी अनुवाद कार्यशाला का आयोजन 5
पुस्तक परिचय 6
राष्ट्रीय पुस्तक न्यास की पुस्तक 'बस्तर की लोक कथाएँ' पर एक विमर्श 7
चिट्ठीघर 8
राष्ट्रीय पुस्तक न्यास के आगामी पुस्तक मेले 8

नवीनतम प्रकाशन

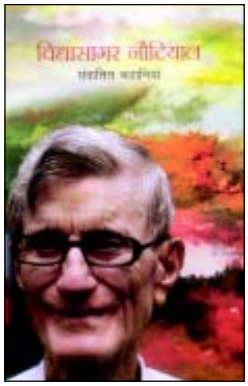

विद्यासागर नौटियाल : संकलित कहानियाँ

पृ. 278 ₹ 125

ISBN 978-81-237-6854-0

मानव संसाधन विकास मंत्री डॉ. एम.एम. पल्लम राजू ने लोकार्पित की

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास की पुस्तक 'व्हाट इज मैथेमेटिक्स'

पुस्तक के लोकार्पण-अवसर पर, बायें से–एम.ए. सिकंदर, प्रो. दिनेश सिंह, डॉ. एम.एम. पल्लम राजू, डॉ. बालकृष्ण शेट्टी, प्रो. प्रवीण सिंक्लेयर एवं के.बी. फेबिअन

''गणित एक बेहद भयभीत करने वाला विषय है जिसका सार्वभौमिक उपयोग होता है। उपयोग विषय से अधिक महत्वपूर्ण है क्योंकि यह उपयोग ही है जो मनुष्य को कला, अंतरिक्ष, वास्तुकला, संरचना, डिजाइन आदि जैसे क्षेत्रों में गणितीय विज्ञान के प्रयोग को प्रोत्साहन देता है। आज गणित का उपयोग हमारे जीवन के हर क्षेत्र में है।'' ये उद्गार केंद्रीय मानव संसाधन विकास मंत्री माननीय डॉ. एम.एम. पल्लम राजू के हैं। वे 17 सितंबर, 2013 को नई दिल्ली के इंडिया इंटरनेशनल सेंटर में राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत से प्रकाशित पुस्तक 'व्हाट इज मैथेमेटिक्स' (लेखक : डॉ. बालकृष्ण शेट्टी) के लोकार्पण-अवसर पर हुए आयोजन में बोल रहे थे।

इस अवसर पर दिल्ली विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. दिनेश सिंह ने कहा कि ''हमारे आभ्यंतर की खोज करने और हमारे अंतस में जो प्रतिध्वनित होता है उसे पहचानने और तब इसे बाहर बेहतर ढंग से अभिव्यक्त करने में समर्थ होना ही शिक्षा है।'' उन्होंने आगे कहा, ''इस विश्व में सब कुछ गणित से जुड़ा हुआ है, यहाँ तक कि जेनेटिक कोड, भौतिकीय नियम और ग्रह तक, जो एक सुनिश्चित गणितीय नियम से सूर्य के चारों ओर घूमता है और इस तरह से भारतीय परंपरा असाधारण रूप से मजबूत है।''

डॉ. एम.एम. पल्लम राजू का उद्बोधन

पूर्व राजदूत श्री के.बी. फेबिअन ने अपने संबोधन में कहा कि गणित समानता के विज्ञान की पहचान कर रहा है और उनके बीच के संबंधों का अध्ययन कर रहा है।

एनसीइआरटी की निदेशक प्रो. प्रवीण सिंक्लेयर ने शैक्षणिक उपकरणों के उपांगों के प्रति परिवर्तनीय प्रतिक्रियाओं के बारे में बात की। उन्होंने कहा कि यह पुस्तक गणित सिखाने के एक वैकल्पिक स्रोत के रूप में मददगार होगी। प्रो. सिंक्लेयर ने न्यास की पुस्तकों की प्रशंसा की और कहा कि ये पुस्तकें बेहद किफायती भी होती हैं।

पुस्तक के लेखक श्री बालकृष्ण शेट्टी ने लोकार्पित पुस्तक की उपादेयता पर प्रकाश डाला और मंत्री महोदय का इस हेतु धन्यवाद किया कि उन्होंने देश में शिक्षा के महत्व पर इतना अधिक बल दिया।

इससे पूर्व, न्यास-निदेशक श्री एम.ए. सिकंदर ने समारोह में उपस्थित अतिथियों एवं आगंतुकों का

स्वागत किया। उन्होंने आशा व्यक्त की कि इस पुस्तक को पाठक हाथोंहाथ लेंगे।

विदित हो कि लोकार्पित पुस्तक गणित का परिचय प्रतिमानों के तार्किक संरचना के अध्ययन के रूप में देती है और यह इसके विभिन्न आयामों, यथा–घटाव, प्रतिनिधित्व एवं रूपांतरण पर 'फोकस' करता है। पुस्तक बेहद सरल-सहज शैली में लिखी गई है और यह गणित की जटिलताओं की सरल भाषा में व्याख्या करती है ताकि आम लोग भी गणित को आसानी से समझ पाएँ। पुस्तक न केवल विविध गणितीय अवधारणाओं की व्याख्या करती है वरन यह उसके इतिहास एवं गणित के क्षेत्र में भारत के योगदान को भी रेखांकित करती है।

पुस्तक के लेखक डॉ. बालकृष्ण शेट्टी गणित के गंभीर अध्येता हैं। उन्होंने प्रेजिडेंसी कॉलेज, कोलकाता एवं आइआइटी में अध्यापन कार्य किया है। उन्होंने जेनेवा, ढाका, मॉस्को, सिंगापुर और पेरिस में भारतीय मिशनों में कार्य किया है और सेनेगल, बहरीन तथा स्वीडेन जैसे देशों में भारत के राजदूत भी रहे।

पुस्तक का लोकार्पण चेन्नै में भी

पुस्तक 'व्हाट इज मैथेमेटिक्स' का लोकार्पण जुलाई माह में चेन्नै में भी किया गया। 12 जुलाई, 2013 को चेन्नै के इंस्टीट्यूट ऑफ मैथेमेटिकल साइंसेज (IMS), तारामणि में आयोजित समारोह में क्वींस यूनिवर्सिटी, कनाडा के डिपार्टमेंट ऑफ मैथेमेटिक्स एंड स्टैटिस्टिक्स के प्रमुख प्रो. एम. राममूर्ति ने उक्त पुस्तक का लोकार्पण किया। उन्होंने कहा कि ''यह पुस्तक छात्रों के बीच गणित को लोकप्रिय बनाने में बेहद उपयोगी और मददगार होगी।'' उन्होंने आगे कहा, ''गणित सब कुछ का आधार है। और इसीलिए, कोई भी देश गणित में ठोस आधार के बिना तरक्की नहीं कर सकता।'' प्रो. राममूर्ति ने गणित विषय पर और भी पुस्तकों की आवश्यकता बताई।

इस अवसर पर संस्थान (IMS) के डिपार्टमेंट ऑफ थ्योरेटिकल कंप्यूटर साइंस के प्रो. आर. रामानुजम ने कहा कि ''यह पुस्तक जहाँ अनेक प्रश्न उठाती है, वहीं यह गणित को एक सत्य, एक गतिविधि एवं एक भाषा के रूप में भी देखती है।'' अन्य वक्ताओं में थे डिपार्टमेंट ऑफ कंप्यूटर साइंस, आइआइटी दिल्ली के प्रो. श्याम कुमार गुप्ता एवं आइएमएस के निदेशक प्रो. बालसुब्रमणियम। अपने संक्षिप्त संबोधन में पुस्तक के लेखक श्री बालकृष्ण शेट्टी ने कहा कि यह पुस्तक विषय के मूल आधार पर 'फोकस' करती है और आशा व्यक्त की कि पुस्तक को एक बड़े पाठक वर्ग द्वारा सराहना मिलेगी।

न्यास में अँग्रेजी भाषा संपादक श्री बिन्नी कूरियन ने कार्यक्रम का समन्वय किया।

मोहम्मदी, उ.प्र. में श्री जितिन प्रसाद द्वारा

न्यास की पुस्तकों का लोकार्पण

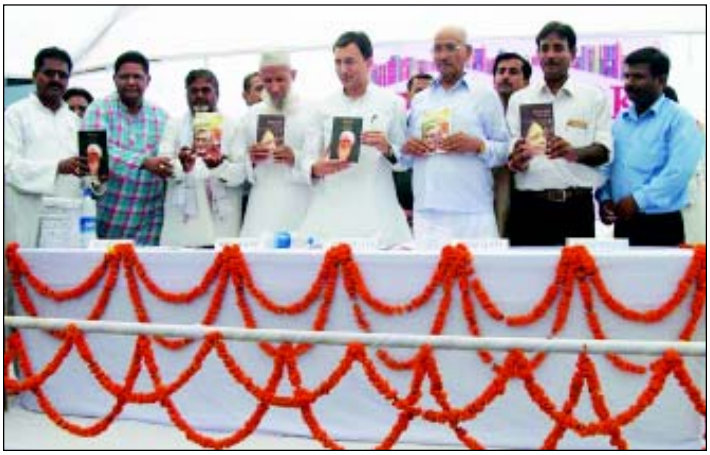

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास की तीन पुस्तकों का लोकार्पण मानव संसाधन राज्य मंत्री माननीय श्री जितिन प्रसाद ने मोहम्मदी के जे पी इंटर कॉलेज में किया। लोकार्पित पुस्तकें थीं : *नासिरा शर्मा : संकलित कहानियाँ, विद्यासागर नौटियाल : संकलित कहानियाँ* और *नानक सिंह की चुनिंदा कहानियाँ*। इस अवसर पर श्री जितिन प्रसाद ने कहा–नेशनल बुक ट्रस्ट अपने प्रकाशनों के लिए और किफायती मूल्य के लिए भी प्रसिद्ध है। ट्रस्ट अपने प्रकाशनों के साथ आज अपनी एक नई मुहिम में निकला है जिसमें उसका प्रयास ग्रामीण पाठकों के बीच पहुँचना है। इससे एक संवाद होगा और ग्रामीण पाठक भी पठनीय सामग्री से परिचित हो सकेंगे। इस मौके पर मंत्री जी ने न्यास द्वारा संचालित सचल पुस्तक वाहन को झंडी दिखाकर ग्रामीण क्षेत्र के लिए रवाना किया ताकि आम जन भी पुस्तकों से परिचित हो सकें।

इस अवसर पर न्यास की ओर से साहित्य संवाद का भी (तीन दिवसीय) आयोजन किया गया, जिसमें कथाकार महेश दर्पण, हीरालाल नागर, डॉ. रमेश तिवारी, श्री राजेंद्र तिवारी, संजीव पांडेय, अभिनय कुमार, अमित त्यागी, रजनी सैनी 'सहर', कैलाशनाथ वाजपेयी, नईम खान रहमतपुरी ने भी हिस्सेदारी की। साहित्यिक कार्यक्रमों में कहानी, कविता और संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी का विषय था, 'ई-पुस्तक का भविष्य : बाजार और संभावनाएँ'। इस अवसर पर इलाके के तमाम बुद्धिजीवियों, पत्रकारों ने भी अपनी उपस्थिति दर्ज कराई।

न्यास में उप निदेशक श्री इमरान उल हक़ ने भी इस अवसर पर न्यास के प्रकाशनों की और आगामी विश्व पुस्तक मेले की जानकारी दी। कार्यक्रम का समन्वय न्यास में हिंदी संपादक डॉ. ललित किशोर मंडोरा ने किया।

इस तरह के आयोजनों से एक बात तो साफ तौर पर निकलकर आती है कि ज्यादा-से-ज्यादा संवाद और पुस्तक प्रदर्शनी का आयोजन ग्रामीण अंचलों में करना चाहिए।

प्रकाश मनु को सम्मान

प्रख्यात बाल साहित्यकार श्री प्रकाश मनु को बाल साहित्य के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान के लिए, उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान का बाल साहित्य के क्षेत्र में दिया जाने वाला सबसे बड़ा पुरस्कार, 'बाल साहित्य भारती सम्मान' प्रदान किया गया। यह सम्मान हिंदी दिवस के अवसर पर 14 सितंबर, 2013 को प्रदेश की राजधानी, लखनऊ में आयोजित एक समारोह में प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री अखिलेश यादव द्वारा प्रदान किया गया। सम्मानस्वरूप 2 लाख रु. की राशि एवं प्रशस्तिपत्र दिया गया।

विदित हो कि श्री मनु की राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत से भी कुछ पुस्तकें प्रकाशित हैं। 'नटखट कुप्पू के अजब अनोखे कारनामे' उनकी शीघ्र प्रकाश्य पुस्तक है।

अरविंद कुमार सिंह को सम्मान

केंद्रीय हिंदी निदेशालय ने अरविंद कुमार सिंह द्वारा लिखित एवं राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत द्वारा प्रकाशित पुस्तक 'भारतीय डाक : सदियों का सफरनामा' का निदेशालय द्वारा संचालित शिक्षा पुरस्कार योजना के अंतर्गत वर्ष 2009 के लिए चयन किया है। विदित हो कि इस पुरस्कार के अंतर्गत लेखक को रु. एक लाख प्रदान किए जाएँगे।

उल्लेखनीय है कि इस पुस्तक का एक खंड 'चिट्ठियों की अनूठी दुनिया' शीर्षक से एनसीइआरटी ने आठवीं कक्षा के हिंदी पाठ्यक्रम में शामिल किया था। यह पुस्तक भारतीय डाक के संबंध में विस्तारपूर्वक एवं विषय का सांगोपांग विवरण देती है। पुस्तक भारतीय डाक के अध्येताओं के लिए विश्वकोश के रूप में है।

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास मुख्यालय में 'हिंदी पखवाड़ा' का आयोजन

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत के दिल्ली स्थित मुख्यालय भवन में दिनांक 1 से 15 सितंबर, 2013 तक 'हिंदी पखवाड़ा' का आयोजन किया गया। पखवाड़े के दौरान हिंदी प्रतियोगिताओं का आयोजन 4 व 5 सितंबर, 2013 को हुआ।

4 सितंबर को आयोजित प्रतियोगिताओं का शुभारंभ करते हुए न्यास के निदेशक, श्री एम.ए. सिकंदर ने हिंदी के प्रचार-प्रसार पर बल देते हुए हिंदी की महत्ता को समझाया तथा इस अवसर पर संयुक्त निदेशक (प्रशासन एवं वित्त), श्रीमती फरीदा एम. नाईक ने उपस्थित रहकर प्रतिभागियों का उत्साहवर्धन किया। न्यास की राजभाषा अधिकारी व हिंदी संपादक, श्रीमती उमा बंसल ने यहाँ उपस्थित अधिकारियों एवं कर्मचारियों का हार्दिक स्वागत करते हुए उन्हें 'हिंदी पखवाड़ा' के अंतर्गत आयोजित की जाने वाली हिंदी प्रतियोगिताओं की जानकारी दी। उन्होंने न्यास के सभी वर्ग के कर्मचारियों को सरकारी कामकाज में अधिक-से-अधिक हिंदी का प्रयोग करने के लिए प्रोत्साहित किया। 'निबंध लेखन प्रतियोगिता' में न्यास के अधिकारियों/कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

5 सितंबर को 'टिप्पण एवं मसौदा लेखन प्रतियोगिता' आयोजित की गई जिसमें विशिष्ट अतिथि व निर्णायक के तौर पर मानव संसाधन विकास मंत्रालय में राजभाषा विभाग की संयुक्त निदेशक, श्रीमती राकेश शर्मा सादर आमंत्रित थीं। इस अवसर पर न्यास की संयुक्त निदेशक, श्रीमती फरीदा एम. नाईक द्वारा विशिष्ट अतिथि को पुस्तक व शॉल से सम्मानित किया गया। इस अवसर पर फरीदा जी ने बताया कि किस तरह न्यास में रोजमर्रा के अधिकतर कार्य हिंदी में करने का प्रयास किया जाता है। विशिष्ट अतिथि, श्रीमती राकेश शर्मा ने अपने वक्तव्य में न्यास के अधिकारियों एवं कर्मचारियों में हिंदी के कार्य के प्रति जागरूकता एवं उत्साह को देखते हुए प्रसन्नता व्यक्त की तथा भविष्य में भी अपने कार्यालयीन कार्यों में हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग करने की प्रेरणा दी। उन्होंने कहा कि यदि हम सब यह निश्चय कर लें कि कार्यालय में तथा अपने अन्य कार्यों में भी यथासंभव हिंदी का प्रयोग करेंगे तो निश्चित तौर पर हम हिंदी को राष्ट्रभाषा का स्थान दिला पाएँगे और भारत की अपनी एक भाषा होगी।

9 सितंबर को न्यास की राजभाषा अधिकारी द्वारा विजयी प्रतिभागियों को प्रथम, द्वितीय, तृतीय एवं सांत्वना पुरस्कार प्रदान किए गए।

पुरस्कृतों का विवरण इस प्रकार है :

4 सितंबर : निबंध प्रतियोगिता के प्रतिभागी विजेताओं की सूची

1.	श्रीमती वसुंधरा लाल	प्रथम	1.	श्री सुनील कुमार	प्रथम
2.	श्री भाग्येंद्र भाई पटेल	द्वितीय	2.	श्रीमती वीना गांधी	द्वितीय
3.	श्री द्विजेंद्र कुमार	तृतीय	3.	श्री प्रवीन कुमार	तृतीय
4.	श्री योगेश कुमार	सांत्वना	4.	श्री संदीप भाटिया	सांत्वना
			5.	श्रीमती पूनम मधुकर	सांत्वना
			6.	श्री राजकुमार	सांत्वना

5 सितंबर : टिप्पण एवं मसौदा लेखन प्रतियोगिता के प्रतिभागी विजेताओं की सूची

1.	श्रीमती कंचन वांचू शर्मा	प्रथम	1.	श्री अविनाश आनंद	द्वितीय
2.	श्री मुकेश कुमार	द्वितीय	2.	श्री राजन	तृतीय
3.	श्री देवराज कुमार	तृतीय	3.	श्रीमती अंजू रानी	सांत्वना
			4.	श्री के. पी. मिश्रा	सांत्वना
			5.	श्री विवेक चरण	सांत्वना

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत के नए प्रकाशन : एक परिचय

नासिरा शर्मा : संकलित कहानियाँ पृ. 400 ₹ 160

अपने सरोकारों को बहुत शिद्दत से व्यक्त करती लेखिका नासिरा शर्मा की कहानियों का शिल्प उन्हें अन्य कथाकारों से अलग खड़ा करता है; शायद यही आभा उनकी कहानियों को ज्यादा जीवंत, ज्यादा आत्मीयता से पाठकों से संवाद करने को उत्सुक करती हैं। कहानियों का वैविध्य उनकी रचनात्मकता को प्रस्तुत ही नहीं करता अपितु समकालीन सरोकारों को एक भाषा देता मुखरित होता है।

नासिरा शर्मा के चर्चित उपन्यासों में *सात नदियाँ एक समंदर, शाल्मली, ठीकरे की मँगनी, कुइयाँजान, जीरो रोड* प्रमुख हैं; इसके साथ ही कहानी संग्रह *शामी काग़ज, पत्थर गली, सबीना के चालीस चोर, दूसरा ताजमहल, खुदा की वापसी* प्रमुख हैं। यात्रा संस्मरण, आलोचना, रिपोर्ताज के साथ सीरियल टीवी लेखन, बच्चों के लिए व नवसाक्षर लेखन को भी नई रचनात्मक भूमि से सिंचित किया। अनेक नाटक व महत्वपूर्ण अनुवाद भी नासिरा शर्मा ने किए।

इन दिनों नासिरा जी पूरी तन्मयता से अपने लेखन को एक नई दिशा देने में व्यस्त हैं।

कई महत्वपूर्ण अंतरराष्ट्रीय पुरस्कारों से सम्मानित हुईं जिनमें 'कथा यूके' (लंदन) का सम्मान प्रमुख है। ISBN 978-81-237-6767-3

मोहित सेन : एक आत्मकथा पृ. 330 ₹ 155

संक्षिप्तीकरण : आनंद किशोर सहाय; अनु. : राजेंद्र तिवारी

मोहित सेन 1929 में कलकत्ता (अब कोलकाता) में एक प्रतिष्ठित पश्चिमीकृत ब्रह्मसमाजी परिवार में पैदा हुए, कलकत्ता और कैंब्रिज में शिक्षा पाई। कैंब्रिज में सेन गणित स्कॉलर वनजा आयंगकर से मिले, और दोनों ने विवाह करने का निर्णय लिया। उन्होंने कैंब्रिज में अपना पार्टी कार्ड भी प्राप्त किया।

1950 से 1953 तक मोहित सेन चीन लोक गणतंत्र में रहे, जहाँ उन्होंने अंतरराष्ट्रीय कम्युनिस्ट स्कूल बीजिंग में अध्ययन किया। बाद में उन्होंने सी.पी.आई. के केंद्रीय कार्यालय में काम किया। अंततः वह पार्टी की केंद्रीय कार्यकारिणी कमेटी में चुने गए। बाद में सी.पी.आई से अलग होकर 'युनाइटेड कम्युनिस्ट पाटी ऑफ इंडिया' की स्थापना की।

व्यापक तौर पर जाने-माने बौद्धिक कम्युनिस्ट सेन ने भारत की अग्रणी पत्रिकाओं में लिखा। उनके अन्य लेखनों में शामिल हैं, 'भारत में क्रांति : समस्याएँ और परिप्रेक्ष्य', 'भारत में कम्युनिस्ट आंदोलन के इतिहास की झलकियाँ', 'माओवाद और चीनी क्रांति', 'काँग्रेस और समाजवाद' तथा 'नक्सलाइट और कम्युनिस्ट'। ISBN 978-81-237-6805-2

स्कूली बच्चों के लिए अंतर्क्रियात्मक कथावाचन सत्र

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत के अनुभाग, राष्ट्रीय बाल साहित्य केंद्र (रा.बा.सा.कें.) द्वारा बच्चों को पुस्तकों एवं पठन से जोड़ने के एक भाग के रूप में नई दिल्ली स्थित न्यास के मुख्यालय भवन में 20 सितंबर, 2013 को एक अंतर्क्रियात्मक कथावाचन सत्र का आयोजन किया गया। दो भागों में विभाजित इस सत्र में लेखिका प्रो. अन्विता अब्बी एवं चित्रकार श्री अतनु रॉय (न्यास की पुस्तक *जीरो मीठे* के चित्रकार) ने भाग लिया।

प्रो. अन्विता अब्बी ने न्यास के पुस्तक विक्रय केंद्र में कथावाचन सत्र में *जीरो मीठे* पुस्तक पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि यह पुस्तक अंडमान एवं निकोबार द्वीपसमूह की पहली वैसी लोककथा है जो प्रकाशित हुई है। उन्होंने रचना-सृजन के अपने अनुभव साझा करते हुए बताया कि यह कथा उन्हें कुछ वर्ष पूर्व एक अंडमानी पुरुष द्वारा सुनाई गई थी। इस लोककथा में उस अंडमानी विश्वास के बारे में बताया गया है जिसमें अंडमान के लोग चिड़ियों को नहीं मारते, यह मानते हुए कि ये (चिड़ियाँ) उनके पूर्वज हैं। उन्होंने वैसी कुछ चिड़ियों के बारे में भी बच्चों को बताया जो केवल अंडमान में पाई जाती हैं। बाद में, उन्होंने *जीरो मीठे* की कहानी का पुनर्वाचन किया जिसे बच्चों ने मजे ले-लेकर सुना।

चित्रकार श्री अतनु रॉय ने बच्चों को चित्रों को पाठकों के लिए आकर्षक बनाने के बुनियादी तत्वों की जानकारी दी। उन्होंने बच्चों को यह भी बताया कि चित्र कथा के अनुकूल सुसंगत हों। दरअसल, किसी कहानी पर चित्र बनाने से पहले पर्याप्त शोध की आवश्यकता होती है।

द्वितीय सत्र में बच्चों ने राष्ट्रीय बाल साहित्य केंद्र के नवीकृत पुस्तकालय को देखा। विदित हो कि रा.बा.सा.कें. का यह पुस्तकालय काफी समृद्ध है। यहाँ देसी और विदेशी विभिन्न भाषाओं की भिन्न-भिन्न विषयों की बाल पुस्तकों का अच्छा-खासा संग्रह है। कथावाचन का दौर यहाँ भी चला तथा श्री रॉय ने बच्चों के साथ चित्र निर्माण के विभिन्न आयामों पर बातचीत की। दोनों विशेषज्ञों ने रचनात्मकता के विभिन्न आयामों पर भी बच्चों से संवाद किया एवं रचनात्मकता को विकसित करने हेतु उनका मार्गदर्शन भी किया। बच्चों ने इस सत्र में काफी गहरी रुचि दिखाई और पुस्तक में उपयोग किए गए चित्रों तथा कहानी के संबंध में अनेक प्रश्न पूछे।

इस कार्यक्रम में दिल्ली और राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के अनेक स्कूलों से शिक्षकों समेत लगभग 90 बच्चों ने भाग लिया। जिन स्कूलों के बच्चे आए उनके नाम हैं–अजंता पब्लिक स्कूल, गुड़गाँव; भटनागर इंटरनेशनल स्कूल, वसंत कुंज एवं श्री सत्य साई विद्या विहार, वसंत कुंज। न्यास की संयुक्त निदेशक (प्रशा. एवं वित्त) श्रीमती फरीदा एम. नाईक तथा प्रख्यात चित्रकार श्री शशि शेट्ये भी इस सत्र में शामिल हुए।

झज्जर में शिक्षा शिविर का आयोजन

देश के विभिन्न क्षेत्रों में शिक्षा शिविर के आयोजन के क्रम में 30 अगस्त, 2013 को झज्जर के राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, माथनहेल (झज्जर) में राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत द्वारा शिक्षा शिविर का आयोजन किया गया।

शिक्षा शिविर का आयोजन स्कूल परिसर में किया गया जिसमें कक्षा IV, V तथा VI के बच्चों ने चित्रकला प्रतियोगिता एवं कक्षा VI, VII एवं VIII के बच्चों ने अनुच्छेद लेखन में भाग लिया। सभी भागीदारों को ड्राइंग एवं लेखन सामग्री न्यास द्वारा उपलब्ध कराई गई। कक्षा IV एवं V के बच्चों ने कविता वाचन भी किया।

कार्यक्रम का उद्घाटन प्रखंड (बुनियादी) शिक्षा अधिकारी श्री ओ.पी. झाखर एवं प्रखंड शिक्षा अधिकारी श्री वीरेंद्र सिंह ने किया।

कार्यक्रम में राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, माथनहेल के प्रिंसिपल श्री नरेंद्र सिंह; राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, माथनहेल के प्रिंसिपल श्री कश्मीर सिंह; झज्जर जिला कानून सेवा प्राधिकरण के एडवोकेट श्री राम निवास बाथी, आरटीआइ एवं सामाजिक कार्यकर्ता, झज्जर श्री राजेश शास्त्री तथा बनवारी लाल ट्रस्ट की सुश्री भावना राजपूत भी उपस्थित थीं।

अपने संबोधन में श्री नरेंद्र सिंह ने जहाँ राष्ट्रीय पुस्तक न्यास के इस पहल को 'सराहनीय' बताया, वहीं श्री कश्मीर सिंह ने भी न्यास की गतिविधियों की प्रशंसा की। श्री राजेश शास्त्री शिक्षा अधिकार अधिनियम एवं हमारे जीवन में पुस्तकों के महत्व पर बोले। श्री राम निवास जी ने जहाँ वैधानिक सूचनाएँ दीं वहीं सुश्री भावना ने स्वास्थ्य शिक्षा के कुछ 'टिप्स' बताए। न्यास की ओर से गए अधिकारी, सहायक निदेशक (प्रदर्शनी-II), डॉ. दीपांकर गुप्ता ने न्यास की गतिविधियों की जानकारी दी तथा धन्यवाद ज्ञापन किया। न्यास में सहायक, श्रीमती सुनीता नरोत्रा ने कार्यक्रम का संचालन किया।

इस शिक्षा शिविर में न्यास की ओर से सचल वाहन पुस्तक प्रदर्शनी (सह विक्रय) भी लगाई गई थी।

कार्यक्रम के अतिथियों को न्यास की ओर से स्मृति चिह्न दिए गए। इस शिक्षा शिविर में लगभग 250 बच्चों ने भाग लिया। प्रत्येक बच्चे को न्यास की एक-एक पुस्तक भेंट की गई, साथ ही उन्हें जलपान भी कराया गया। चित्रकला प्रतियोगिता तथा अनुच्छेद लेखन के विजेताओं को, साथ ही जिन बच्चों ने गीत-संगीत के कार्यक्रम प्रस्तुत किए, उन सब को पुरस्कृत किया गया।

पुस्तक प्रकाशन में प्रशिक्षण पाठ्यक्रम का उद्घाटन

पिछले कई वर्षों की भाँति इस वर्ष भी राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत के नई दिल्ली स्थित मुख्यालय, वसंत कुंज के नेहरू भवन में चार सप्ताह के पुस्तक प्रकाशन में प्रशिक्षण पाठ्यक्रम की शुरुआत हुई। 2 से 28 सितंबर, 2013 तक चले इस पाठ्यक्रम का उद्घाटन 2 सितंबर को न्यास के अध्यक्ष श्री ए. सेतुमाधवन द्वारा किया गया। अपने

न्यास-अध्यक्ष का संबोधन

संक्षिप्त उद्बोधन में न्यास-अध्यक्ष ने भारतीय प्रकाशन उद्योग में नवागंतुक एवं इच्छुक व्यावसायिकों के लिए प्रचुर संभावनाओं पर विशेष चर्चा की। उन्होंने कहा, ''हम लेखक और प्रकाशक इस उद्योग को नए विचारों से अनुप्राणित करने एवं इस उद्योग को एक नई ऊँचाई, एक नए मुकाम पर ले जाने के लिए युवा व्यावसायिकों पर निर्भर हैं। जहाँ तक प्रकाशन उद्योग का सवाल है संभावनाएँ सीमित हैं।'' उन्होंने कहा कि यह कार्यक्रम प्रकाशन उद्योग के बारे में कुल मिलाकर एक सही विचार का संप्रेषण करेगा और अभ्यर्थियों को सीखने एवं अपने कौशल को और अधिक पैना बनाने में मदद करेगा।

न्यास-निदेशक श्री एम.ए. सिकंदर ने अपने संबोधन में कहा कि हम विगत 17 वर्षों से इस पाठ्यक्रम का संचालन कर रहे हैं और आज बड़े-बड़े प्रकाशनगृहों के कुछ वैसे व्यावसायिक भी हैं जो कभी इस पाठ्यक्रम का एक भाग हुआ करते थे।

न्यास-निदेशक का संबोधन

विदित हो कि पुस्तक प्रकाशन पाठ्यक्रम के अंतर्गत प्रकाशन क्षेत्र के अनेक आयामों, यथा–संपादन, पुस्तकोन्नयन, प्रतिलिप्यधिकार मामले, तकनीक, अनुवाद, उत्पादन आदि पर संबंधित क्षेत्र के विशेषज्ञों द्वारा जानकारी प्रदान की जाती है।

लाला जगदलपुरी को समर्पित हल्बी अनुवाद कार्यशाला का आयोजन

''अनुवाद स्वाभाविक होना चाहिए'' : बाबू थॉमस

''अनुवाद बेहद सहज होना चाहिए, ताकि पढ़ने वाले को लगे कि रचना उसी की ही मूल भाषा में लिखी गई है। प्रत्येक भाषा की अपनी संस्कृति होती है, जो एक समान नहीं होती। अनुवाद का काम असल में उन संस्कृतियों को करीब लाने का होता है।'' यह उद्गार थे समाजसेवी व हल्बी भाषा में जन स्वास्थ्य के लिए काम कर रहे श्री बाबू थॉमस के, जो राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत (नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया) और जिला प्रशासन, जगदलपुर द्वारा आयोजित बच्चों की पुस्तकों के हल्बी में अनुवाद की तीन दिवसीय कार्यशाला में बतौर मुख्य अतिथि बोल रहे थे। यह कार्यशाला 24 से 26 सितंबर, 2013 तक 'नमन बस्तर' में आयोजित की गई। इसमें वरिष्ठ बाल साहित्यकार श्रीमती कुसुमलता सिंह प्रमुख मार्गदर्शक के तौर पर शामिल हुईं।

कार्यशाला का प्रारंभ करते हुए राष्ट्रीय पुस्तक न्यास में हिंदी संपादक श्री पंकज चतुर्वेदी ने बताया कि यह आयोजन बस्तर के साहित्य के शिखर पुरुष लाला जगदलपुरी जी को समर्पित है। उन्होंने हल्बी बोली के बारे में लालाजी के विचार व उनकी एक कविता का पाठ भी किया। आयोजन के मुख्य अतिथि बाबू थॉमस ने कई उदाहरणों और सवाल-जवाब के माध्यम से बताया कि अनुवाद सटीक होना चाहिए, लेकिन यह नहीं लगना चाहिए कि अनुवाद है, न ही मूल का अर्थ व भाव बदलना चाहिए। इस तरह से अनुवाद कार्य बेहद कठिन प्रक्रिया है। वरिष्ठ साहित्यकार श्री शशि पांडे ने बस्तर की बोली, उनके विन्यास व प्रभाव क्षेत्र पर चर्चा करते हुए राष्ट्रीय पुस्तक न्यास को इस कार्य के लिए धन्यवाद दिया। उद्घाटन सत्र के मार्गदर्शक वक्ता श्री सुभाष पांडे ने अपनी बात हल्बी बोली में ही रखते हुए हल्बी के अन्य बड़े लेखकों, जैसे राम सिंह ठाकुर, गणेश प्रसाद पाणिग्रही आदि को याद किया। उन्होंने कहा कि अनूदित पुस्तकें बच्चों तक व्यापक स्तर पर पहुँचे, इसके लिए भी काम किया जाना होगा। श्री पांडे ने लोक बोलियों में पुस्तकों को लाने की जरूरत पर प्रकाश डालते हुए कहा कि यह बोलियों के लुप्त होने के संकट का सबसे बड़ा निदान है।

कार्यशाला के दूसरे सत्र का प्रारंभ सुश्री कुसुमलता सिंह के वक्तव्य से हुआ, जिसमें उन्होंने बताया कि अनुवाद किस तरह लोगों को जोड़ता है तथा लेखकों को लोकप्रियता प्रदान करता है। उल्लेखनीय है कि इस कार्यशाला में अनुभवी लेखकों के साथ युवा छात्रों को भी जोड़ा गया। इस आयोजन में रुद्रनारायण पाणिग्रही ने रा.पु. न्यास से प्रकाशित *परियों का खेल* पुस्तक का अनुवाद किया, वहीं नरेंद्र पाढ़ी ने *झाड़ू लगाने वाला राजा* का। श्री विक्रम सोनी *(राजा जो कंचे खेलता था* और *चंदा गिनती भूल गया),* यशवंत गौतम *(मेंढक और साँप),* शिव कुमार पांडे *(जंगल के दोस्त),* सुभाष पांडे *(पूँछ की पूछ),* शोभाराम नाग *(नौ नन्हे पक्षी)* नरेंद्र कुमार मंडन *(रूपा हाथी),* कुमारी वर्षा कुंवर *(क्या हुआ)* ने भी कोष्ठक में उल्लेखित पुस्तक का हल्बी में अनुवाद किया। विदित हो कि ये सभी पुस्तकें राष्ट्रीय पुस्तक न्यास ने मूल रूप से विभिन्न भारतीय भाषाओं में छापी हैं। खास बात ये रही कि सभी अनूदित पुस्तकों की कंप्यूटर पर टाइपिंग, प्रूफ पठन, संपादन आदि कार्य यहीं तीन दिनों में संपन्न हुआ।

पुस्तक परिचय

आदिवासी शौर्य एवं विद्रोह

संपा. : रमणिका गुप्ता; पृ. 144 ₹ 300

राधाकृष्ण प्रकाशन प्रा. लि., 7/31, अंसारी मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली-02

इस पुस्तक में अलग-अलग भाषा व राज्यों के वीर नायकों व नायिकाओं की कथाओं के अतिरिक्त पूर्वोत्तर के विभिन्न राज्यों में हुए विद्रोहों, आंदोलनों पर शोधपरक गाथाएँ व सामग्री प्रस्तुत की गई हैं।

गाँव की सिसकियाँ (कहानी संग्रह)

जयनंदन; पृ. 184 ₹ 275

पुस्तक भवन, आर जेड 35-बी, गली नं. 1ए, कैलाशपुरी एक्सटेंशन, नई दिल्ली-45

ग्रामीण जीवन की विवशता व तड़पन, पढ़े-लिखे होनहार गँवई युवाओं की भटकन और एक प्रेमी के टूटे हृदय की धड़कन से गुजरते हुए 13 कहानियों का यह नायाब संग्रह अंततः पाठकों को लेखक का एक अनोखा अर्पण बन जाता है।

तीसरी गली (उपन्यास)

अंजनी कुमार ठाकुर; पृ. 288 ₹ 460

सामयिक बुक्स, 3320-21, जटवाड़ा, दरियागंज, एन, एस. मार्ग, नई दिल्ली-02

किशोरवय की उद्धत लहरों में बहकर किशोरियाँ अपना सर्वस्व लुटा देती हैं। फिर जब होश आता है तब उससे उसकी सबसे बेशकीमती अमानत लुट चुकी होती है। लेखक ने किशोरियों को सतर्क करने के लिए इस उपन्यास की रचना की है।

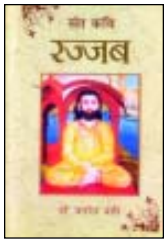

संत कवि रज्जब

डॉ. बलदेव वंशी

पृ. 152 ₹ 250

संत कवि सहजोबाई

डॉ. बलदेव वंशी

पृ. 144 ₹ 250

इंद्रप्रस्थ इंटरनेशनल, 18-बी, साउथ अनारकली, दिल्ली-51

संत कवि रज्जब और सहजोबाई विगत 300 वर्षों के अंदर के महान संत हुए हैं। जैसी इनकी वाणी, वैसे ही इनके कर्म। इन दो महान संतों के जीवन और वाणी पर विद्वान लेखक ने कलम चलाई है।

पीठ पीछे की दुनिया (कहानी संग्रह)

नीलम चतुर्वेदी; पृ. 128 ₹ 200

सुहानी बुक्स, सी-37, ग्राउंड फ्लोर (ब्लॉक सी), गणेशनगर, पांडवनगर कॉम्प्लेक्स, दिल्ली-92

पीठ पीछे की निस्संग दुनिया का दरस करवाने वाली कथाकार के पास भाषा की सहजता है, सरलता है। तेरह कहानियों के इस संग्रह में विभिन्न भावबोधों की कहानियों का संगुंफन है। कहानी का प्लॉट हमारे-आपके परिवेश का ही है, कोई आयातित नहीं।

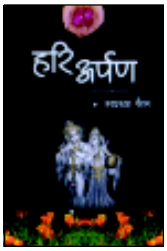

हरि अर्पण (कविता संग्रह)

जयप्रकाश गौतम; पृ. 136 ₹ 350

जूली पब्लिकेशन्स, पी-137, पिलंजी, सरोजिनी नगर, नई दिल्ली-23

अपने पास-परिवेश के विषयों को ही कवि ने अपनी कविताओं का आधार बनाया है। समाज की विसंगतियों एवं विरोधाभासों को कवि ने अपनी कविता में उतारा है। इस क्रम में समाज की कई विडंबनाओं की सिलवट उधड़ती चली जाती है।

हिंदी बाल साहित्य के शिखर व्यक्तित्व

प्रकाश मनु

पृ. 240 ₹ 160

प्रकाशन विभाग, सीजीओ कॉम्प्लेक्स, नई दिल्ली-03

प्रेमचंद, हरिऔध, गुप्त, दिनकर, सुभद्रा, महादेवी आदि समेत कुल 25 बाल साहित्य के शिखर व्यक्तित्व और उनकी उपलब्धियों के बारे में वरिष्ठ लेखक की सहज-सरल लेखनी। एक उपयोगी पुस्तक।

कशमकश (उपन्यास)

मनोज सिंह; पृ. 352 ₹ 520

किताबघर प्रकाशन, 4855-56/24, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-02

परंपरा, आधुनिकता, उत्तर-आधुनिकता; सपने, यथार्थ, लक्ष्मणरेखा; अतीत, वर्तमान, भविष्य; इच्छाएँ, कामनाएँ व भोग, फिर कशमकश—नारी के आंतरिक संघर्ष की कहानी—करुण व विचलित कर देने वाली।

नीलकंठ (उपन्यास)

लोकेश भारद्वाज; पृ. 128 ₹ 200

पराग बुक्स, ई-28, लाजपत नगर, साहिबाबाद, गाजियाबाद-05

नीलकंठ शीर्षक उपन्यास के साथ-साथ इस पुस्तक में न जाने किस मकसद से दो कहानियाँ और कुछ कविताएँ भी डाल दी गई हैं। वैसे, यह उपन्यास लेखक द्वारा कैंसर जैसी भयावह बीमारी के भोक्ता होने का एक साहसगाथा है।

बूँद-बूँद रिसती जिंदगी (जिंदगीनामा)

परगट सिंह सिद्धू; पृ. 84 ₹ 125

आधारशिला प्रकाशन, बड़ी मुखानी, हल्द्वानी, नैनीताल, उत्तराखंड-263139

पंजाबी में पूर्व प्रकाशित आत्मकथा का हिंदी अनुवाद। एक सैनिक रचनाकार की आत्मकथा, जिसमें लेखक ने रेशा-रेशा खोलकर रख दिया है। बेबाक और बेखौफ रचना।

सृष्टि का सच (कविता संग्रह)

डिम्पल अरविन्द; पृ. 120 ₹ 150

यूनीस्टार बुक्स प्रा. लि., एससीओ-26-27, सेक्टर 34ए, चंडीगढ़-160022

नवोदित रचनाकारों को विभिन्न राज्य सरकारें अनुदान देकर उनकी रचनाओं का प्रकाशन करती हैं। यह एक अच्छा उपक्रम है। प्रस्तुत संग्रह के लिए हरियाणा राज्य साहित्य अकादमी का आर्थिक सौजन्य मिला है। कवयित्री में संभावना दीखती है।

सुखमन की तरह (कविता संग्रह)

मीनू 'सुखमन'; पृ. 104 ₹ 160

तरलोचन पब्लिशर्स, 3236, सेक्टर-15-डी, चंडीगढ़

हिंदी और पंजाबी की रचनाकार 'सुखमन' की रचनाओं में अनेक अक्श उभरते हैं। कहीं प्रेम है, कहीं देशप्रेम है, कहीं स्त्री है, कहीं स्त्री जीवन की समस्याएँ। इन्हीं रेशों से कवयित्री ने कविता का महीन ताना-बाना बुना है। कवयित्री ने यह संग्रह महज 7 साल की उम्र में गुजर गई बेटी अर्पिता को अर्पित किया है।

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास की पुस्तक 'बस्तर की लोक कथाएँ' पर एक विमर्श

विमर्श

डॉ. कौशलेन्द्र मिश्र

पुस्तक : बस्तर की लोक कथाएँ; **संपादकद्वय** : लाला जगदलपुरी, हरिहर वैष्णव
प्रकाशक : राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत

पुस्तक के प्रारंभ में प्रस्तावना या प्राक्कथन के स्थान पर एक 26 पृष्ठीय निवेदन प्रकाशित किया गया है जो निश्चित ही इस पुस्तक का एक विशेष आकर्षण है।

अविभाजित पूर्व बस्तर के वर्तमान सात जिलों के वनवासी अंचलों में प्रचलित आंचलिक भाषाओं, उन्हें बोलने वाले समुदायों, भाषायी विशेषताओं, आंचलिक भाषाओं के पारस्परिक संबंधों-प्रभावों और इन आंचलिक भाषाओं की व्याकरणीय समृद्धता का विश्लेषण करता हुआ हरिहर जी का छब्बीस पृष्ठीय निवेदन अपने आप में एक संग्रहणीय आलेख हो गया है। लोक कथाओं के इस संकलन में यदि यह प्राक्कथन न होता तो पुस्तक निष्प्राण-सी रह जाती। न केवल भाषाप्रेमियों अपितु भाषाविज्ञानियों और शोधछात्रों के लिए भी यह प्राक्कथन बहुत ही उपयोगी बन गया है। बस्तर की लोकबोलियों में हमें द्राविड़ भाषा परिवार और भारोपीय भाषा परिवार के बीच एक सहज संबंध स्थापित होता हुआ स्पष्ट दिखाई देता है जो भाषा के जिज्ञासुओं के लिए आनंददायी है।

भौगोलिक दूरियों के विस्तार के साथ-साथ उच्चारण में विभिन्न सामुदायिक और आंचलिक भिन्नताओं के कारण भाषाओं और बोलियों के स्वरूप में परिवर्तन होते रहते हैं। विभिन्न समुदायों के पारस्परिक सामाजिक संबंध जहाँ भाषाओं को प्रभावित करते हैं वहीं उन्हें समृद्धता भी प्रदान करते हैं। बस्तर की सीमायें आँध्र प्रदेश, ओड़िशा और महाराष्ट्र की सीमाओं को स्पर्श करती हैं इसी कारण बस्तर की बोलियों पर हिंदी, तेलुगु, मराठी, ओड़िया और संस्कृत आदि भाषाओं के प्रभाव तो हैं ही प्रवासी विद्वानों, व्यापारियों, घुमंतू बंजारों, विभिन्न राजवंशी शासकों, राजसेवकों और विदेशी आक्रमणकारियों के सतत सम्पर्क के कारण तमिल, राजस्थानी, अरबी, फारसी और अँग्रेजी आदि सुदूर प्रांतों एवं राष्ट्रों की भाषाओं के भी स्पष्ट प्रभाव देखे जा सकते हैं।

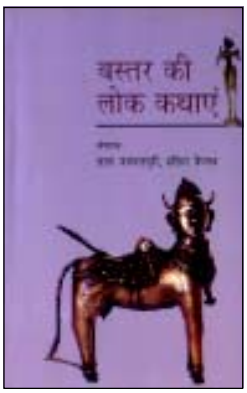

संस्कृति, सभ्यता और परम्पराओं के संवहन की मौलिक विधा के रूप में वाचिक और श्रवण परम्पराओं ने लोक कथाओं को जन्म दिया है। लिपि के विकास से बहुत पहले अपने अनुभवों, संदेशों और शिक्षाओं के संप्रेषण तथा मनोरंजन के लिए पूरे विश्व के मानवसमाज ने लोक कथाओं की मनोरंजक विधा को अपनी-अपनी बोलियों में गढ़ा और विकसित किया। निश्चित ही लोक कथाओं का उद्देश्य केवल मनोरंजन न होकर समाज की बुराइयों और शिक्षाओं को वाचिक परंपरा के माध्यम से अगली पीढ़ियों को सौंपना भी था। इसीलिए, इन लोक कथाओं में मनुष्य की स्वार्थ और धूर्तता जैसी नकारात्मक प्रवृत्तियों के विरुद्ध बुद्धिमत्तापूर्ण उपायों से किए जाने वाले संघर्षों से प्राप्त होने वाली विजय की कामना के साथ-साथ आंचलिक विविध समस्याओं के समाधान के लिए भी कहानियाँ गढ़ी जाती रही हैं।

कहानियाँ अपने अंचल और समुदाय का प्रतिनिधित्व करती हैं। बस्तर की लोक कथाओं के माध्यम से बस्तर के जनजीवन, उनकी सरल परंपराओं, जीवनचर्या और समस्याओं को प्रतिबिंबित किया गया है। बस्तर की लोक कथाओं की विशेषता इन कथाओं के भोलेपन और कथा कहने की शैली में दृष्टिगोचर होती है। इस नाते ये कथाएँ बस्तर के वनवासी समाज की अकिंचन जीवनशैली, उनकी सोच, और उनकी परंपराओं का एक लेखा-जोखा प्रस्तुत करती हैं।

इन सरल कहानियों के पात्र आम वनवासी के बीच से उठकर आते हैं इसीलिए कोस्टी लोक कथा 'लेड़गा' का राजकुमार भी शहर घूमने की इच्छा करता है और संपन्न होते हुए भी जीवन की आम समस्याओं से दो-चार होता है। लोक कथाओं में ऐसा भोलापन अकिंचन समाज से ही स्रवित होकर आ पाता है। राजघरानों की कुटिलताओं के किस्से भी आम आदमी के पास तक पहुँचते-पहुँचते हल्बी लोक कथा 'राजा आरू बेल-कयना' एवं पनारी लोक कथा 'राजा चो बेटी' के किस्सों की तरह कोई-न-कोई चमत्कारिक समाधान खोज ही लेते हैं। यह लोकजीवन की सरलता और जीवन में सुख की आकाँक्षा का प्रतीक है। अतींद्रिय शक्तियों में आस्था, दैवीय चमत्कार, तंत्र-मंत्र और जादू-टोना पर विश्वास आदिम मनुष्य की भौतिक सामर्थ्य सीमा के अंतिम बिंदु से प्रकट हुए वे उपाय हैं जो किसी-न-किसी रूप में सुसंस्कृत, सुसभ्य और अत्याधुनिक समाज में आज भी अपना स्थान बनाए हुए हैं। अबूझमाड़ी कथा 'गुमजोलाना पिटो' और दोरली कथा 'देवत्तुर वरा' के माध्यम से वनवासी समूहों द्वारा अतींद्रिय शक्तियों में आस्था प्रकट की गई है जो मनुष्य को उसकी सीमित शक्तियों की आदिम अनुभूति की विनम्र स्वीकृति है।

मानव समाज में धूर्तों के कारण मिलने वाले दुखों और उनसे मुक्ति के लिए युक्ति तथा दैवीय न्याय की स्थापना हेतु पशु-पक्षियों के माध्यम से मनोरंजक शैली में 'सतूर कोलियाल' जैसी सरल-सपाट कहानियाँ गढ़ी गई हैं जो बच्चों को मनोरंजन के साथ-साथ कुछ सीख भी देती हैं।

रक्त संबंधों में विवाह किया जाना किसी भी विकसित और सभ्य समाज के लिए अकल्पनीय है तथापि कुछ जाति समूहों में रक्त संबंधों में विवाह की परंपरा उन-उन समाजों द्वारा मान्य होकर स्थापित है। अबूझमाड़ की जनजातियों में ऐसे संबंधों पर चिंता प्रकट करते हुए अबूझमाड़ी गोंडी लोक कथा 'ऐलड़हारी अनी तम दादाल' के माध्यम से एक सुखद एवं वैज्ञानिक संदेश देने का प्रयास किया गया है। रक्त संबंधों में विवाह की वर्जना न केवल नैतिक और सामाजिक अपितु सुस्थापित वैज्ञानिक तथ्यों का भी शुभ परिणाम है। विषमगोत्री विवाह जातक के न केवल बौद्धिक और शारीरिक विकास की उत्कृष्टता के लिए अपितु जातियों को विनाश से बचाने के लिए भी अपरिहार्य है। जेनेटिक डिसऑर्डर, म्यूटेशन और ऑटोइम्यून डिसऑर्डर जैसी विनाशक व्याधियों से बचने के लिए नई पीढ़ी को वैज्ञानिक संदेश देने वाली ऐसी कहानी गढ़ने के लिए लोक कथाकार निश्चित ही साधुवाद के पात्र हैं।

रात में सोते समय दादी-नानी की सीधी-सरल कहानियाँ छोटे-छोटे बच्चों के लिए न केवल मनोरंजक होती हैं अपितु बालबुद्धि में संस्कारों का बीजारोपण भी करती हैं। मनोरंजन के आधुनिक साधनों ने हमारी नई पीढ़ी को संस्कारों से वंचित कर दिया है, पारिवारिक आत्मीय संबंधों की बलि ले ली है और समाज को दिशाहीन स्थिति में छोड़ दिया है। आधुनिक संसाधनों और सिमटती भौगोलिक सीमाओं के कारण विभिन्न सभ्यताओं के पारस्परिक सन्निकर्ष के परिणामस्वरूप हमारी प्राचीन विरासतें समाप्त होने के कगार पर हैं। हम अपनी नई पीढ़ियों को कुछ बहुत अच्छा नहीं दे पा रहे हैं, ऐसे में लोक कथाओं के संकलन के माध्यम से अपनी विरासत के संरक्षण का प्रयास निश्चित ही कई दृष्टियों से प्रशंसनीय एवं अनुकरणीय है। संपादकद्वय से हमारा विनम्र अनुरोध है कि बस्तर अंचल की सभी बोलियों में प्रचलित लोक कथाओं का एक बार पुनः संकलन कर बस्तर की प्रतिनिधि लोक कथाओं का एक और अंक निकालने के सद्प्रयास का कष्ट करें।

लोकसाहित्य समाज की सहज और भोली अभिव्यक्ति ही नहीं है वह लोकजागरूकता का भी प्रतीक है। आधुनिक जीवनशैली और जीवन को सुविधायुक्त बनाने वाले संसाधनों ने हमारी सामाजिक संवेदनाओं को कुंठित कर दिया है जिसका सीधा दुष्प्रभाव लोकसाहित्य पर पड़ा है। हम पुराने का संकलन भर कर रहे हैं, नवीन का सृजन नहीं कर पा रहे। यह एक दुःखद और निराशाजनक स्थिति है। छोटे-छोटे बच्चे जो अभी पुस्तकें पढ़ने के योग्य नहीं हुए हैं उनके लिए तो लोक कथाएँ और लोकगीत ही उनकी जिज्ञासाओं का रुचिकर समाधान कर सकने और संस्कारों का बीजारोपण कर पाने में सक्षम हो पाते हैं। इसीलिए मेरा स्पष्ट मत है कि आज नई पीढ़ी में संस्काराधान के लिए नए संदर्भों में लोकसाहित्य के नवसृजन की महती आवश्यकता है।

बस्तर की लोक कथाओं के इस संकलन में गुंडाधुर और गेंदसिंह जैसे भूमकाल के महानायकों की निष्फल तलाश अपने उन पाठकों को निराश करती है जो तत्कालीन शासन व्यवस्था द्वारा किए जाने वाले शोषण के विरुद्ध वनवासी समाज में स्वतःस्फूर्त उठे विद्रोह और उनकी वीरता की कथाओं में न केवल रुचि रखते हैं अपितु अपने अतीत में अपने पूर्वजों के गौरव को भी तलाश करते हैं। लोक कथाएँ इतिहास को आगे ले जाती हैं, हमें गुंडाधुर और गेंदसिंह को जिंदा रखना ही होगा।

यद्यपि, प्रत्येक कहानी के अंत में हिंदी के पाठकों के लिए हिंदी अनुवाद दिया गया है किंतु इस संकलन को और भी उपयोगी बनाने की दृष्टि से अगले संस्करण में मूल कहानी के प्रत्येक पैराग्राफ के बाद उसका हिंदी में अनुवाद दिया जाना उन स्वाध्यायी भाषाप्रेमियों के लिए सुविधाजनक होगा जो नई-नई भाषाओं को सीखने में रुचि रखते हैं।

कथाओं के साथ-साथ इस पुस्तक में यदि बस्तर के जनजीवन को प्रदर्शित करने वाले संदर्भित रेखाचित्र भी दिए गए होते तो बस्तर से दूर रहने वाले पाठकों को बस्तर और भी उभरकर दिखाई दिया होता।

त्रुटिहीन प्रकाशन और मुखपृष्ठ की साजसज्जा ने पुस्तक में चार चाँद लगा दिए हैं जिसके लिए नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया साधुवाद का पात्र है। लोक कथा के इस संकलन के लिए आदरणीय लाला जगदलपुरी जी एवं हरिहर वैष्णव जी का सद्प्रयास अनुकरणीय है।

R.N.I. No. 64445/96
Postal Regd. No. DL (SW) 1/4077/2012-14
Licence to post without prepayment
L. No. U(SW) 23/2012-14
Mailing date 15/16 same month
Date of publication 08/10/2013

चिट्ठीघर

पहली बार **संवाद** का कोई अंक (अगस्त 2013) मिला। बहुत बेहतरीन लगा। इतनी कम कीमत में इतनी अच्छी छपाई के साथ ज्ञानवर्धक जानकारी हमारे बीच पहुँचाने के लिए आपकी पूरी टीम को बधाई। यह **संवाद** मेरे लिए किसी वरदान से कम नहीं। इसकी जितनी तारीफ की जाए, कम है। पहली बार पढ़ते ही मैं इसका प्रशंसक बन गया हूँ। आशा है, आगामी अंकों में भी आप इसी तरह की जानकारी हमारे बीच पहुँचाते रहेंगे। **देवेश कुमार भोई,** पुटका, सरायपाली, महासमुंद, छत्तीसगढ़

संवाद बुलाता है। **संवाद** लुभाता है। / मन हर्ष में थिरकता, जब भी **संवाद** आता है।
नित हैं नवल तराने, नित हैं दृश्य सुहाने / **संवाद** को वह ही माने, जो **संवाद** को जाने।
प्रो. शरद नारायण खरे, मंडला, म.प्र.

संवाद लाता संवाद / साहित्य के संवाद
बहुत बड़ा काम है / घर-घर जाता **संवाद**। **डॉ. नरेंद्र नाथ लाहा,** ग्वालियर, म.प्र.

नेशनल बुक ट्रस्ट संवाद नियमित मिल रहा है। यह पत्र देश-विदेश के पुस्तक मेलों, बैठकों, हिंदी सम्मेलनों तथा पुस्तक प्रकाशनों से परिचय करा रहा है। **संवाद** पाठकों को पुस्तक समुदाय तथा साहित्यिक गतिविधियों से रू-ब-रू कराता है। **संवाद** के सितंबर 2013 अंक में कई पुस्तक मेलों और प्रदर्शनियों से अवगत कराकर आपने ज्ञानवर्धन किया है। **प्रकाश भानु महतो,** सरायकेला, खरसावाँ, झारखंड

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास मुंबई पुस्तक मेला
29 नवंबर से 3 दिसंबर, 2013
स्थान : बांद्रा-कुर्ला कॉम्प्लेक्स, मुंबई
समय : प्रातः 11 बजे से रात्रि 8 बजे तक (प्रतिदिन)
आयोजक
राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत
प्रवेश निःशुल्क
सभी पुस्तकों पर 10% छूट

भाग लें
नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला
15 से 23 फरवरी, 2014
एवं
नई दिल्ली प्रतिलिप्यधिकार मंच
प्रगति मैदान, नई दिल्ली
सम्मानित अतिथि देश : पोलैंड
www.newdelhiworldbookfair.gov.in

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास के आगामी पुस्तक मेले

भोपाल/इंदौर पुस्तक मेला, मध्य प्रदेश	–	अक्तूबर, 2013
इलाहाबाद पुस्तक मेला, उत्तर प्रदेश	–	अक्तूबर, 2013
बाल पुस्तक मेला, कोचीन/तिरुवनंतपुरम	–	अक्तूबर-नवंबर, 2013
चंडीगढ़ पुस्तक मेला, चंडीगढ़	–	13-18 नवंबर, 2013
जमशेदपुर पुस्तक मेला, झारखंड	–	18-26 नवंबर, 2013
मुंबई पुस्तक मेला, महाराष्ट्र	–	28 नवंबर से 3 दिसंबर, 2013
हैदराबाद पुस्तक मेला, आंध्र प्रदेश	–	30 नवंबर से 7 दिसंबर, 2013
राँची/पटना पुस्तक मेला, बिहार	–	नवंबर, 2013
चंडीगढ़ पुस्तक मेला, केंद्रशासित क्षेत्र	–	दिसंबर, 2013
हैदराबाद पुस्तक मेला, आंध्र प्रदेश	–	दिसंबर, 2013
मंगलोर पुस्तक मेला, कर्नाटक	–	4-10 जनवरी, 2014

पुस्तक मेले से संबंधित जानकारी के लिए संपर्क करें :
उप-निदेशक (प्रदर्शनी) दूरभाष : 011-26707700/26707778

नेशनल बुक ट्रस्ट *संवाद* भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय के अधीन संचालित स्वायत्त संगठन, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत का मुख पत्र है।

इस पत्र के आलेखों में व्यक्त विचारों से न्यास की सहमति का होना आवश्यक नहीं है।

संपादक : **बलदेव सिंह 'बद्दन'**
कार्यकारी संपादक : **दीपक कुमार गुप्ता**
उत्पादन अधिकारी : **नरेन्द्र कुमार**

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत
नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II
वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070
ई-मेलः office.nbt@nic.in
वेबसाइट : www.nbtindia.gov.in

पाठकों से अनुरोध है कि वे **नेशनल बुक ट्रस्ट *संवाद*** के बारे में अपने विचार संपादक को लिखें।

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत की ओर से सतीश कुमार द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित तथा पुष्पक प्रेस प्रा.लि., 203-204, डी.एस.आई.डी.सी. शेड, फेज-I, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, नई दिल्ली-110020 से मुद्रित और राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत, नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II, वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070 से प्रकाशित। संपादक : बलदेव सिंह 'बद्दन'।

एस.एस. इंटरप्राइजेज, प्रथम तल, जी.जी.-1/36बी, विकासपुरी, नई दिल्ली-110018 से टाइपसेट।

भारत सरकार सेवार्थ

डाक वापसी की दशा में कृपया इस पते पर वापस करें :
नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II, वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070